International Journal of
Global Multidisciplinary Research and Analytics
IJGMRA | ISSN (Online): 3107-6483
July-September 2025 | Vol. 01 | Issue 2
Website: www.thearyapublication.com

मोहन राकेश की कहानियों में महानगरीय जीवन से सम्बद्ध समाज

दिनेश कुमार[1]* & प्रो. पवन कुमार सिंह[2]

[1]सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, का.सु. साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या, भारत
ई-मेल: kpal1190@gmail.com
[2]प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, का.सु. साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या, भारत

DOI: http://doi.org/10.5281/zenodo.17314328
Accepted on: 28/09/2025 Published on: 10/10/2025

'महानगर' शब्द दो शब्दां 'महा' और 'नगर' के योग से बना है। महा का अर्थ बड़ा अथवा विशाल से है और नगर से आशय ऐसी आधुनिक सुख-सुविधाओं से युक्त मानव बस्ती से है जो मानव विकास के केन्द्र के रूप में पहचाने जाते हैं। नगरां में प्रायः शिक्षित, संभ्रात, अभिजन निवास करते है। महानगर से आशय ऐसे नगरों से है जहाँ की जनसंख्या अधिकतम होती है। यह महानगर आर्थिक, राजनीतिक, गतिविधि का केन्द्र होते हैं। हमारे देश में कलकत्ता, बम्बई, दिल्ली, मद्रास आरम्भिक महानगर थे। आज बंगलौर, हैदराबाद जैसे शहरों को भी महानगर की श्रेणी में रखा जाने लगा है। डॉ. सीमा गुप्ता के अनुसार ''वे नगर जो अपने विकास के द्वारा राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पूर्ण रूप से प्रभाव स्थापित कर लेते हैं, महानगर की संज्ञा से अभिविहित किये जाते है।''1 वास्तव में महानगर भौतिक विकास, सुख-सुविधाओं का प्रतिनिधित्व करने वाली आधुनिक मानव बस्तियाँ हैं। जहाँ आकर्षक जीवन शैली, चकाचांध फैशन परस्ती व्यक्ति को आकृष्ट तो करती है किन्तु उसे सन्तुष्ट नहीं कर पाती है।

महानगरीय जीवन के परिवेश में भीड़, भागदौड़, भोगवाद, बेरोजगारी, महंगाई, आवास एवं प्रदूषण की समस्या के साथ-साथमनोसामाजिक विकृतियाँ जैसे-एकाकीपन, अजनबीपन, मानवीय कुंठा, संत्रास, भ्रष्टाचार, अपराधीकरण, जैसी चुनौतियाँ महानगरीय जीवन केअभिशाप के रूप में विद्यमान रहती हैं। मोहन राकेश के जीवन एवं उनके साहित्य का सरोकार महानगरीय जीवन से रहा है। स्थायी जीविका की तलाश में वे बम्बई गए और काफी समय तक वहीं रहे भी परन्तु वहाँ के हो नहीं पाये, यद्यपि कि जीवन भर उनका आना-जाना बम्बई लगा रहा। मोहन राकेश अंतिम रूप में दिल्ली में बस गए। वहाँ के परिवेश को बारीकी से देखा, परखा और जिया। इसी नगरीय जीवन का प्रतिफलन उनकी कहानियों में अपने संपूर्ण परिवेश के साथ हुआहै। मोहन राकेश की 'मिसपाल', 'आर्द्रा', 'भूखे', 'क्वार्टर', 'पाँचवे माल का फ्लेट', 'रोजगार', 'मवाली' आदि कहानियाँ महानगरीय परिवेश से गहरे स्तर पर सम्बद्ध हैं। 'मिस पाल' कहानी की मुख्यपात्र 'मिस पाल' मध्यवर्गीय शिक्षित एवं संवेदनशील नारी है जो दिल्ली के एक दफ्तर में

काम करती है। उसका का बचपन उपेक्षित रहा है। वह अपनी वेदना व्यक्त करती हुई कहती है-''सोचो, माँ का मेरा घर में होना ही बुरा लगता था। पिता जी को मेरे संगीत सीखने से चिढ़ थी.....भाइयों का जो थोड़ा बहुत प्यार था वह भी भाभियों के आने के बाद छिन गया....मैंने आज तक कितनी मुश्किल से अपनी अम्.....अ.....पवित्रता को बचाया है।''2 मिस पाल जैसी स्वाभिमानी स्त्री को दिल्ली जैसे महानगर के मध्यवर्गीय परिवार में घुटन भरा जीवन जीना पड़ता है। माता और पिता दोनों उसकी भावनाओं का, रूचियों का सम्मान नहीं करते। जिस आत्मसम्मान की तलाश में वह नौकरी करना आरम्भ करती है वहाँके सहकर्मियों द्वारा भी अशोभनीय टिप्पणी एवं कटाक्ष करके मिस पाल के आत्मसम्मान को ठेस पहुँचायी जाती है। दिल्ली जैसे महानगरीय समाज के घुटन, टूटन, अकेलेपन, अजनबीपन को एक स्त्री पात्र के माध्यम से मोहन राकेश ने सटीक अभिव्यक्ति दी है।

महानगरीय समाज में व्यक्ति की पहचान आर्थिक-सामाजिक इकाई के रूप में होती है। महानगरीय परिवेश में संवेदनहीनता हर तरफ देखी जा सकती है। मिस पाल अपने ही घर में इसलिए उपेक्षित होती है क्योंकि वह एक स्त्री है। स्त्रीयों को अपने शौक के अनुसार कैरियर चुनने का अधिकार परम्परागत मध्यवर्गीय समाज में नहीं था, इसीलिए उसे भार स्वरूप समझा जाता था। मिस पाल के दफ्तर के लोग उसे भोग्यवस्तु के रूप में देखते थे। मिस पाल अपने घर में अकेली थी, दफ्तर में भी अकेले हीरही और इसी उपेक्षा अकेलेपन से बचने के लिए वह कुल्लूमनाली के बीच स्थित एक कस्बे 'रायसन' चली जाती है वहाँ भी यह अकेलापन, अजनबीपन, घुटन, मानवीय कुंठा उसका पीछा नहीं छोड़ती। आत्मीय मित्र'रणजीत' को कुल्लू में पाकरउसका अंतर्मन आह्लादित हो उठता है। एक अलग तरह की सुखद अनुभूति से वह संपन्न हो उठती है। परन्तु रणजीत के वापस दिल्ली जाने के वक्त मिस पाल का एकाकीपन की वेदना अनावृत्त हो उठती है। ''मिस पाल की आँखे उमड़ आयीं। वह अपने आँसुआें को रोकने के लिए दूसरी तरफ देखने लगी'' तुम समझते हो मैं अपने शरीर की देखभाल ही नहीं करती।''3

महानगरीय समाज की स्त्री, पुरूष के उपभोग एवं सेवा के लिए बनी एक निर्जीव वस्तु नहीं, अपितु वह शिक्षित, जागरूक, आत्मविश्वास से युक्त आत्मनिर्भर जीवन में विश्वास रखती है, इसीलिए वह स्वाभिमानी भी है। किसी अपने या पराये की उपेक्षा वह सहन नहीं कर सकती, भले ही इसके लिए उसे कुछ भी कीमत चुकानी पड़े। महानगरीय समाज में स्त्री का अपना स्वतंत्र अस्तित्व है। महानगरीय समाज की स्त्री, समाज में अपना स्थान स्वयं बनाना चाहती है। 'मिस पाल' अपने माता-पिता की उपेक्षा को भी सहन न कर सकी और पन्द्रह साल पहले घर छोड़कर नौकरी के

लिए निकल आती है। महानगरीय जीवन में रचा बसा व्यक्ति परिवेशगत परिस्थितियों एवं उपभोक्तावादी मनःस्थिति बोध से संपृक्त होने के कारण भीड़ में भी वह नितान्त अकेला है भावनात्मक सम्बन्ध खोखले और दिखावटी ज्यादा लगते हैं। मोहन राकेश का यह विचार उनकी महानगरीय कहानियों के चरित्र में किसी न किसी रूप में दिख ही जाता है। 'आर्द्रा' कहानी में 'बिन्नी' और 'लाली' की माँ 'बचन' का जीवन बिन्नी के साथ भी अकेला है और बड़े बेटे लाली के भरे पूरे परिवार में भी वह अपने को भावनात्मक रूप से अकेला महसूस करती है। लाली के यहाँ रहते समय बचन के पास पर्याप्त समय है फिर भी उसका मन पूजा में नहीं लगता। यह अकेलापन बचन के साथ ही नहीं बल्कि महानगरीय परिवेश में रह रहे प्रत्येक व्यक्ति की नियति बन गया है, जोकि परिवेशगत है।

'भूखे' कहानी की 'एवलिन' भी पति की असामयिक मृत्यु के बाद एकाकी जीवन जीने के लिए अभिशप्त है। एकाकी परिवार में पति या पत्नी दोनों में किसी एक के न रहने पर जीवन भार स्वरूप हो जाता है। एकाकी या केन्द्रीय परिवार महानगरीय समाज की मुख्य विशेषता है। 'रोजगार' कहानी का जमशेद दारूवाला, 'मवाली' कहानी का 'लड़का' जो माँ के मरने के बाद अनाथ होकरमवाली का जीवन जी रहा है। महानगरों में ऐसे हजारों परिवार होते हैं। 'पाँचवे माले के फ्लेट' में 'अविनाश' का जीवन भी अजनबीपत के शाये में बीतता है। 'क्वार्टर' कहानी में कहने को तो 'शंकर राजवंशी' का भरा पूरा परिवार है किन्तु रात में सोने के लिए वह जगह ढूढ़ता है। और जगह न मिलने पर सड़क की रोशनी में ही टहलने लगता है। किसी भी समाज में आत्मकेन्द्रित व्यक्ति के मनोभाव के कारण अकेलापन, अजनबीपन, घुटन, कुंठा, संत्रास होना स्वाभाविक है। महानगरीय दैनिक जीवन में किसी के पास दूसरे को जानने-समझने एवं देने का समय ही नहीं है। सभी अपने 'स्व' की परिधि में चक्कर काटते जीवन गुजारते हैं।

संवेदनहीनता महानगरीय समाज की प्रमुख विशेषता है। पश्चिमीकरण के प्रभाव से महानगरीय जीवन अपने सामाजिक संस्कार, सदाचार, शिष्टाचार, नैतिकता को खोता जा रहा है। शिक्षा का स्वरूप भी ऐसा हो गया है जो केवल हमें ज्ञान से साक्षात्कार तो कराती है किंतु चरित्र निर्माण में अपनी भूमिका का निर्वहन करती दिखाई नहीं पड़ती है। पश्चिम की भोगवादी प्रवृत्ति हमारे दैनिक जीवन संस्कृति का अंग बनती जा रही है। कम से कम समय में अधिक से अधिक भौतिक समृद्धि की लालसा, भागदौड़ भरी जिन्दगी नगरीय जीवन का अभिन्न अंग है। व्यक्ति, मशीन के साथ कार्य करते-करते स्वयं मशीन जैसा यंत्रवत होता जा रहा है। 'मिस पाल' कहानी की पात्र 'मिस पाल' के साथ उसके दफ्तर के साथी मानवीय सम्बन्ध रखने के बजाय पुरुषवादी नजरिये से देखते हैं उन सभी के लिए

मिसपाल कामवासना की विषयवस्तु है इसीलिए मिसपाल के सहकर्मी उसके सन्दर्भ में आपस में अभद्र टिप्पणियाँ करते रहते हैं। यह टिप्पणी उनकी संवेदनहीनता का ही प्रमाण है। 'आर्द्रा' कहानी में माँ 'बचन' जब 'लाली' के सिर पर बादाम रोगन तेल, रखने का प्रस्ताव बहू के सामने रखती है तो बहू का जवाब है इसके लिए नौकर तो है ही पर वे तेल रखाते ही नहीं। यहाँ बहू की अपने पति लाली के प्रति संवेदनहीनता ही दिखती है। 'रोजगार' कहानी में 'जमशेद दारूवाला' का अपने बहन 'मिस दारूवाला' के प्रति रूखा एवं उपेक्षा का व्यवहार जमशेद दारूवाला की संवेदनहीनता का ही प्रमाण है। 'भूखे' कहानी में 'एवलिन' एवं उसके बच्चे के प्रति ढाबे में बैठे लोगों की संवेदनहीनता ही है जो भूखे बच्चे एवं लाचार माँ की बेबसी का लाभ लेना चाहते है। 'मलबे का मालिक' कहानी का 'रक्खे पहलवान' सांप्रदायिक दंगे की आड़ में अपने स्वार्थ के लिए एक निर्दोष मुस्लिम परिवार की निर्मम हत्या करके मकान के मलबे का झूठा मालिक बन बैठा है। 'मवाली' कहानी का 'बालक' जो मृत माँ की आखिरी निशानी के लिए एक तथाकथित संभ्रात परिवार द्वारा मार खाता है। दर्शक दीर्घा भी बच्चे की लाचारी और बेबसी को ही दोषी मानने लगती है। पीड़ित बालक के प्रति संवेदना एवं सहानुभूति किसी की भी नहीं दिखती। इस तरह से महानगरीय स्वरुप निर्मित्ति के पीछे उसके परिवेश का महत्वपूर्ण योगदान है।

महानगरीय समाज में स्त्री अपने स्वतंत्र अस्तित्व को अलग पहचान देना चाहती है। स्त्री शिक्षा एवं सामाजिक चेतना ने महानगरीय स्त्री को आत्मनिर्भर एवं स्वाभिमानी बना दिया। पुरूष प्रधान परंपरागत भारतीय समाज में नारी हमेशा घर की देहली के अंदर की वस्तु मानी गयी है। आधुनिक शिक्षा, साक्षरता से नारी पुरुष के पीछे चलने वाली नहीं अपितु कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाली सहचरी, सहयोगी के रूप में उभरी है। महानगरीय समाज में एकल परिवार की संरचना का स्वरूप भी धीरे-धीरे टूटने लगा। को न्यूनतम इकाई माना जाता था, स्त्री के 'कैरियर वूमेन' के रूप में उभर के आने पर वैवाहिक परिवार में स्त्री पुरुष के परम्परागत स्वरुप में व्यापक परिवर्तन परिलक्षित होने लगा। पति, पत्नी को परिवार के साथ-साथ स्वतंत्र इकाई के रूप में देखा जाने लगा। नौकरीपेशा के रूप में उभरी 'कैरियर वूमेन' की अवधारणा से पारिवारिक ढाँचे में आमूल परिवर्तन हुआ। अब पति, पत्नी का आपसी सम्बन्ध त्याग, समर्पण न होकर दावेदारी एवं प्रतिस्पर्धा का हो गया है। स्त्रियाँ अब पुरुषों के समक्ष अपने स्वतंत्रता एवं अधिकार का दावा पेश करने लगीं हैं। इसे पुरुष मानसिकता ने सहजता से स्वीकार नहीं किया। जिसका दुष्परिणाम है कि स्त्री-पुरुष संबंधो में तनाव, अंतर्द्वंद्ध, घुटन, संत्रास, एवं कुंठा के भाव महानगरीय समाज में प्रकट लगे हैं।

मोहन राकेश की सर्वाधिक चर्चित कहानी 'एक और जिदंगी' में 'प्रकाश' और 'बीना' दोनों पात्र परिवार से कही अधिक महत्व अपने कैरियर एवं स्वतंत्र जीवन को देते हैं। परिणामस्वरूप विवाह के कुछ ही महीनों बाद दोनों अलग-अलग रहने के लिए विवश हो जाते हैं। दोनों अलग-अलग जगह पर कार्य भी करने लगते हैं। पुरुषवादी मानसिकता पर टिप्पणी करते हुए कहानीकार कहता है''वह किसी ऐसी ही लड़की के साथ जीवन बिता सकता है जो बीना के उलट हो। बीना में बहुत अहंकार था, वह उसके बराबर पढ़ी लिखी थी, उससे ज्यादा कमाती थी। उसे अपनी स्वतंत्रता का बहुत मान था। वह अब एक ऐसी लड़की चाहता था जो हर लिहाज से उस पर निर्भर करे और जिसकी कमजोरियाँपुरुष के आश्रय की अपेक्षा रखती हां।''4

मोहन राकेश के लेखन की सभी विधाओं का मूल सरोकार स्त्री-पुरुष दाम्पत्य सम्बन्ध ही रहा है। तीनां चर्चित नाटक, एवं उपन्यास और अधिकांश कहानियां का विषय स्त्री-पुरुष सम्बन्धों की परत-दर-परत पड़ताल रही है। राकेश के लिए 'स्त्री' एक जादुई शब्द है जो उनके समस्त साहित्य को आकार देती है। उनके लेखन के विशय और विधा में विभिन्नता होते हुए केन्द्रीय चरित्र के रूप में स्त्री ही उभरती है। मोहन राकेश ने स्वयं स्वीकार किया है कि उन्होंने जब जब लिखने का प्रयास किया स्त्री-पुरुष सम्बन्धां के इतिहास को फिर-फिर दोहराया है। और जब कभी उससे हटकर लिखना चाहा तो रचना प्राणवान नहीं हुई।

'अपरिचित' कहानी के दोनों अपरिचित स्त्री और पुरुष पात्र एक दूसरे के माध्यम से अपने असंतुष्ट दाम्पत्य जीवन का पुनरावलोकन करते दिखते है। 'गुंझल' कहानी की कथावस्तु ही दाम्पत्य जीवन के आपसी द्वंद्व एवं घुटन पर केन्द्रित है। 'चंदन' के आगे बढ़कर समस्या के सुलझाने के प्रयास को 'कुंतल', चंदन की दुर्बलता के रूप में देखती है। 'पहचान' कहानी में दाम्पत्य सम्बन्ध के टूटने का नाबालिग बच्चे की मनोभावना पर कितना दुष्प्रभाव हो सकता है इसका मार्मिक एवं मनोवैज्ञानिक उद्घाटन हुआ है। दाम्पत्य सम्बन्धां में द्वंद्व, घुटन एवं उसका विघटन महानगरीय जीवन की सामान्य बात हो गयी है जो धीरे-धीरे छोटे नगरां, कस्बां और गाँवों में भी दिखने लग गयी है।

महानगरीय परिवेश में जहाँ भौतिक संसाघनों का विकास एवं सुख-सुविधाएँउच्चस्तरीय होती है। वहीं सामाजिक जीवन की चुनौतियाँ भी कम नहीं होती। महानगरों में भ्रष्टाचार, अपराधीकरण, बेरोजगारी, वेश्यावृत्ति के अनुकूल परिवेश होता है। 'परमात्मा का कुŸा', 'आखिरी सामान', 'क्लेम', 'खंडहर' जैसी कहानियों में राकेश ने तत्कालीन महानगरीय समाज में व्याप्त भय-भूख-भ्रष्टाचार को अनावृत्त करने का सफल प्रयास किया है। 'परमात्मा

का कुŸा' कहानी में सरकारी एवं सार्वजनिक जीवन में जड़ जमा चुके भ्रष्टाचार को अनावृत्त करने का प्रयास हुआ है। परमात्मा का कुत्ताअर्थात सामान्य जनता यदि सरकारी कुŸाे (भ्रश्ट सरकारी नौकर) पर निर्लज्ज होकर भौंकेगें नहीं तो ये सरकारी महकमों के कुŸो इसी तरह भ्रश्टाचार की जड़ जमायें रहेगें। सरकारी कार्यालयों, न्यायालयों मे रिश्वतखोरी, मगजमारी और लालफीताशाही इस हद तक हो गयी है कि सामान्य अर्जी की सुनवाई में कई-कई वर्ष लग जाता है। परमात्मा का कुŸा बार-बार अर्जी देने से तंग आकर अपने परिवार सहित अर्धनग्न होकर कार्यालय के समक्ष भौंकता है। जिसके परिणामस्वरूप उसकी अर्जी की सुनवाई उसी दिन हो जाती है।यह कहानीं अपने अधिकारों के प्रति सजग और निर्लज्ज होकर संघर्ष करने की प्रेरणा देती है। परमात्मा का कुŸा का नायक कहता है कि ''चूहों की तरह बिटर-बिटर देखने से कुछ नहीं होता। भौकों, भौकों सबके सब भौकों। अपने आप सालां के कान फट जायेंगे भौकों कुŸाें, भौंको.....'' हयादार हो, तो सालहा-साल मुँह लटकाये खड़े रहो। अर्जियाँ टाइप कराओ और नल का पानी पियो.....नहीं तो बेहया बनो बेहयाई हजार बरकत है।''5

'आखिरी सामान' कहानी में 'सुशील भण्डारी' एक्साइज एवं टेक्सेसन विभाग में अधिकारी है। वह अपने पद और रुतबे का दुरूपयोग करके अपनी शान-ओ-शौकत, रहन-सहन उच्चस्तरीय का कर लेता है। रिश्वतखोरी और रुतबा उनके पतन का कारण भी बनता है। जिसे बनाये रखने के लिए वह अपने प्रतिष्ठा के मद में अपनी पत्नी को चाय पार्टी के बहाने उच्चाधिकारियों केसाथ शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करने के लिए परिवेश निर्मित करता है इस तरह देखा जा सकता है की महानगरीय परिवेश एवं संस्कृति से संपृक्त मध्यवर्गीय महानगरीय व्यक्ति का चारित्रिक और नैतिक पतन का स्तर क्या है? जब मिस्टर भण्डारी अपने से बड़े अधिकारीयों की आकांक्षाओं की पूर्ति करने में असफल हो जाते हैं, तो वे उन्हें पुलिस एवं उच्चाधिकारियों के षड़यंत्र में का शिकार हो जाते है। परिस्थितियाँ इस तरह बिगड़ जाती हैं की मिस्टर भंडारी को जीविकोपार्जन के लिए एक एक कर घर का सामान नीलाम करना पड़ता है। परिणामस्वरूप जीवन यापन के लिए मिसेज भण्डारी को घर का सामान नीलाम करना पड़ता है। आखिरी सामान के रूप में सीढ़ियों से नीचे उतरती हुई मिसेज भण्डारी स्वयं को ठगा हुआ पाती हैं।

'क्लेम' कहानी में सरकारी मुआबजा जायदाद की कीमत से बहुत कम मिलता है। डेढ़ लाख की जायदाद का सिर्फ साठ हजार रुपया मिला। ऐसा सरकारी महकमे में कमीशनखोरी और भ्रष्टाचार के कारण है। भ्रष्टाचार ने सम्पूर्ण व्यवस्था को दीमक की तरह खोखला कर दिया है। 'खंडहर' कहानी में धार्मिक संस्थानां में व्याप्त भ्रष्टाचार को

उजागर करने का प्रयास किया गया है। कहानी में महात्मा 'चेतराम शास्त्री' की लिप्सा से बढ़कर मंदिर के महंथ एवं मुख्य पुजारी 'गोस्वामी' की लिप्सा है। यह दोनों धन लोलुप ही नही हैं चरित्रहीन भी हैं। 'पारो' के प्रति दोनां धार्मिकों का आकर्षण उनके चारित्रिक पतन को ही दर्शाता है। सार्वजनिक रूप से ऐसे लोग स्वयं को मोह-माया धन-संपदा एवं भौतिक आकर्षणों से मुक्त रखने का दिखावा करते है किन्तु अवसर मिलते ही उनके चरित्र एवं व्यवहार का मूल स्वरूप प्रकट हो ही जाता है। यह महानगरीय भौतिकता का ही प्रभाव है।

महानगरीय जीवन धन, सम्पत्ति, समृद्धि का केन्द्र होते हैं। इसीलिए अपराध होना भी अस्वाभाविक नहीं है। एक 'ठहराहुआ चाकू' कहानी में महानगरीय जीवन में अपराधियों के दुस्साहस, उसके रसूख, उनका भय किस प्रकार आम नागरिकां के दैनिक जीवन के लिए चुनौती बनता जा रहा है। इस कहानी में राकेश ने महानगरीय समाजमें व्याप्त खुलेआम अपराध के आतंक को यथार्थ रूप में अभिव्यक्त दी है। 'नत्था सिंह' जैसे अपराधी का भय स्थानीय नागरिकों में इतना रहता है कि पीड़ित लोग उनके खिलाफ शिकायत करने से डरते हैं और यदि शिकायत कर भी दिए तो भी उनके मन में कही न ही डर बना रहता है। एक 'ठहरा हुआ चाकू' का नायक कहता है ''अब मैं इस इलाके में नहीं रह पाऊंगा 'उसने सोचा' और वह घर छोड़ देना पड़ा, तो और कहाँ रहूँगा ? नौकरी तो अब तक मिली नहीं.....।''6

देह व्यापार, दुराचार महानगरीय जीवन का हिस्सा हो गया है। 'रोजगार' कहानी में 'जमशेद दारूवाला' की बहन खुलेआम देह व्यापार के ट्रिप पर रहती है। 'मिसेज एडवर्ड' के पूँछने पर वह अपने अवैधानिक गर्भ के आपरेशन को स्वीकार भी करती है। देहव्यापार से एक ओर लाचार स्त्रियों का शोषण होता है वहीं महानगरीय संस्कृति में रोजगार एवं मनबहलाने का साधन भी माना जाता है। इस कुप्रथा से समाज में विकृति को प्रोत्साहन मिलता है। वहीं अपहरण, अपराध, बलात्कार, हत्या जैसी घटनाओं को प्रश्रय मिलता है। 'जमशेद दारूवाला' जैसे अकर्मण्य लोग इसी प्रकार के असामाजिक एवं अवैधानिक साधनों से अपना जीवन जीने में विश्वास रखते है। मिसेज एडवर्ड कहती है ''तू शरम से डूब नहीं मरता ? बहन के पाप की कमाई से रोटी खाता है और मेरे सामने आँखे तरेरता है। थू है तेरे जैसे आदमी पर! थू.....थू।''7

महानगरीय जीवन में बेरोजगारी और बेकारी भी एक मुख्य समस्या है। बेकारी के कारण ही असामाजिक कार्यों को प्रोत्साहन मिलता है। बेकारी आसामाजिक गतिविधियों का प्रमुख कारण है। अपराध, भ्रष्टाचार, फिरौती, वेश्यावृत्ति

जैसे असामाजिक-अवैधानिक कार्यों से लोग जीविका ढूढ़ते हैं। मोहन राकेश की 'कंम्बल' कहानी में परिवार की गरीबी, बेकारी, लाचारी बनारसी जैसी नवयुवती को सेक्स वकर्स के रूप में कार्य करने के लिए प्रेरित करती है। 'भूखे' कहानी की 'एवलिन' भी बेकारी, लाचारी की वजह से ही बालरूम की चकाचौंध से प्रभावित होती दिखती है। महानगरीय जीवन से सम्बद्ध समाज, राकेश की कहानियों में संपूर्णता एवं सजीवता में व्यक्त हुआ है। भागदौड़, भोगवाद, एकाकी जीवन पद्धति, संवेदनहीनता अजनबीपन, स्त्रियों का स्वतन्त्र अस्तित्व, दाम्पत्य संबंधो का विघटन, भ्रष्टाचार, अपराधीकरण, बेकारी, वेश्यावृत्ति जैसी प्रवृत्तियाँ महानगरीय जीवन का अभिन्न हिस्सा होती जा रही हैं। जो महानगरों से छोटे नगरों, कस्बो, गाँवों तक प्रसार पा रही है।

सन्दर्भ सूची-

- राकेश, एम. (2019). मोहन राकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ. राजपाल एण्ड सन्स. 25
- वही, पृ. सं.-29
- वही, पृ. सं.-307
- वही, पृ. सं.-357
- वही, पृ. सं.-163
- वही, पृ. सं.-329